



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

### असाधारण EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)  
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

लॉ 515 [ नई दिल्ली, मंगलवार, नवम्बर 27, 1990/अग्रहायण 6, 1912

No. 515] NEW DELHI, TUESDAY, NOVEMBER 27, 1990/AGRAHAYANA 6, 1912

इस भाग में भिन्न पद्ध संस्था वी वासी ही जिससे कि यह भाग संकलन के रूप में  
रखा जा रहा

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a  
separate compilation

गृह मंत्रालय  
अधिसूचना  
नई दिल्ली, 27 नवम्बर, 1990

सा. का. नि. 925 (प्र) :—राष्ट्रपति द्वारा जारी की गई<sup>1</sup>  
निम्नलिखित उद्घोषणा सर्वसाधारण के सूचनार्थ प्रकाशित की जा रही  
है :—

यह मुझे, भारत के राष्ट्रपति, भार. बैंकटरामन, को प्रसम राज्य  
के राज्यपाल से एक रिपोर्ट प्राप्त हुई है और इस रिपोर्ट तथा मुझे  
प्राप्य सूचना पर विचार करने के बाद मेरा समाधान हो गया  
है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है, जिससे उस राज्य का शासन  
भारत के संविधान (जिसे इसमें इसके पश्चात् "संविधान" कहा  
गया है) के उपबंधों के अनुसार नहीं बलाया जा सकता है;

अतः, अब मैं, संविधान के अनुच्छेद 356 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का  
तथा उस निमित्त मैं समर्थ बनाने वाली अन्य सभी शक्तियों का  
प्रयोग करते हुए एवंद्वारा उद्घोषणा करता हूँ कि मैं :—

(क) उक्त राज्य की सरकार के सभी कृत्य और उस राज्य के  
राज्यपाल में निहित, तथा उनके द्वारा प्रयोक्तव्य सभी  
शक्तियाँ, भारत के राष्ट्रपति के लैंड में स्वयं संभालता  
हूँ;

3166 GI/90

(म) योपित करता हूँ कि उक्त राज्य के विधानमंडल की शक्तियों  
समद द्वारा या उसके प्राधिकार के अधीन प्रयोक्तव्य होंगी;  
और

(ग) निम्नलिखित आनुषंगिक और पारिणामिक उपबंध करता  
हूँ जो इस उद्घोषणा के उद्देश्यों को प्रभावी बनाने के लिए  
मुझे आवश्यक या बाध्यनीय प्रतीत होते हैं; अर्थात् :—

(1) इस उद्घोषणा के उपर्युक्त खण्ड (क) के आधार पर  
मेरे द्वारा संभाले गए कृत्यों और शक्तियों का प्रयोग  
करते हैं, मेरे लिए भारत के राष्ट्रपति के रूप में  
उम सीमा तक जिस तक मैं डीक समसू उक्त राज्य  
के राज्यपाल के माध्यम से कार्य करता विधिपूर्ण  
होगा;

(2) उक्त राज्य के संबंध के संविधान के निम्नलिखित  
उपबंधों के प्रवर्तन को एतद्वारा निर्भित किया जाता  
है, अर्थात् :—

प्रनृष्ठेव 3 के परन्तुक का जनना भाग जितने का संबंध राष्ट्रपति  
द्वारा राज्य के विधानमंडल को निर्देश नहने से है;

प्रनृष्ठेव 151 के खंड (2) का उतना भाग जितने का संबंध  
भारत के नियन्त्रक और महालेखा परीक्षक द्वारा राज्यपाल के सम्म

प्रस्तुत किए गए प्रतिवेदनों को राज्य के विधानसंडल के समक्ष रखे जाने से है;

अनुच्छेद 163 और 164;

अनुच्छेद 166 के खंड (3) का उत्तमा भाग जितने का संबंध राज्य सरकार के कार्य के मंत्रियों के बीच बढ़ावे से है;

अनुच्छेद 167 और 169;

अनुच्छेद 174 का खंड (1), अनुच्छेद 175, 176 और 177;

अनुच्छेद 179 का खंड (ग) और उस अनुच्छेद का प्रथम परन्तुक;

अनुच्छेद 181, 188, 189, 193, 194, 196 और 198;

अनुच्छेद 199 का खंड (3) और खंड (4);

अनुच्छेद 208 रो 211 (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं);

अनुच्छेद 213 के खंड (1) का परन्तुक और खंड (3) का परन्तुक; और

अनुच्छेद 323 के खंड (2) का उत्तमा भाग जितने का संबंध रापन सहित रिपोर्ट को राज्य के विधानसंडल के समक्ष रखे जाने से है;

(3) संविधान में राज्यपाल के प्रति किसी निवेश का अर्थ उस राज्य के संबंध में राष्ट्रपति के प्रति निवेश लगाया जाएगा और उसमें राज्य के विधानसंडल या विधान सम्मा के प्रति किसी निवेश का, जहाँ तक उसका संबंध उसके कृत्यों और उसकी शक्तियों से है, अर्थ जब तक कि संवर्त द्वारा प्रभावा प्रयोक्तित न हो, मंत्रके प्रति निवेश लगाया जाएगा और विधिवित्तया अनुच्छेद 213 में राज्यपाल और राज्य के विधानसंडल या उसके सदनों के प्रति निवेशों का अर्थ, क्रमांक राष्ट्रपति और संसद या उसके सदनों के प्रति निवेश लगाया जाएगा :

परन्तु इसमें की कोई बात अनुच्छेद 153, अनुच्छेद 155 से लेकर अनुच्छेद 159 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं), अनुच्छेद 299 और अनुच्छेद 361 तथा छिन्नीय अनुसूची के पैरा 1 से लेकर पैरा 4 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) के उपबंधों पर प्रभाव नहीं आतेगी और न राष्ट्रपति को उग्र खंड के उपबंध (1) के अधीन उस सीमा तक जहाँ तक वह ठीक समझे उक्त राज्य के राज्यपाल के माध्यम से कार्य करने से निवारित करेगी ;

(4) संविधान में राज्य के विधानसंडल के या उसके द्वारा बनाए गए प्रधिनियमों या विधियों के प्रति किसी निवेश का गेसे अर्थ लगाया जाएगा मानो उसके अंतर्गत इस उद्घोषणा के आधार पर संसद द्वारा, या राष्ट्रपति या संविधान के अनुच्छेद 357 के खण्ड (1) के उपबंध (क) में निर्दिष्ट अन्य प्रधिकारी द्वारा राज्य के विधानसंडल की शक्तियों का प्रयोग करने हुए बनाए गए प्रधिनियमों या विधियों के प्रति निवेश है, और असम राज्य में लागू है और साधारण खण्ड प्रधिनियम, 1897 (1897 का 10) का उत्तमा भाग जितना राज्य विधियों पर लागू है गेसे

किसी प्रधिनियम या विधि के बारे में ऐसे प्रभावी होगा मानो यह उस राज्य विधानसंडल का प्रधिनियम हो :

नई दिल्ली,  
विधानक 27-11-90

(भार वेंटरामन)  
राष्ट्रपति

नई दिल्ली,  
विधानक 27-11-90

[सं. -V/11013/11/90-नी. एस. आर.]

नरेश कन्द्र, गृह सर्विय

## MINISTRY OF HOME AFFAIRS NOTIFICATION

New Delhi, the 27th November, 1990

G.S.R. 925(E).—The following Proclamation by the President is published for general information :—

Whereas, I, R. Venkataraman, President of India, have received a report from the Governor of the State of Assam and after considering the report and other information received by me, I am satisfied that a situation has arisen in which the Government of that State cannot be carried on in accordance with the provisions of the Constitution of India (hereinafter referred to as "the Constitution") ;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by article 356 of the Constitution and of all other powers enabling me in that behalf, I hereby proclaim that I—

- (a) assume to myself as President of India all functions of the Government of the said State and all powers vested in or exercisable by the Governor of that State ;
- (b) declare that the powers of the Legislature of the said State shall be exercisable by or under the authority of Parliament ; and
- (c) make the following incidental and consequential provisions which appear to me to be necessary or desirable for giving effect to the objects of this proclamation, namely :—
  - (i) in the exercise of the functions and powers assumed to myself by virtue of clause (a) of this Proclamation as aforesaid, it shall be lawful for me as President of India to act to such extent as I think fit through the Governor of the said State ;
  - (ii) the operation of the following provisions of the Constitution in relation to that State is hereby suspended, namely :—
    - so much of the provisions of article 3 as relates to the reference by the President to the Legislature of the State ;
    - so much of clause (2) of article 151 as relates to the laying before the Legislature of the State of the reports submitted to the Governor by the Comptroller and Auditor-General of India ;
    - articles 163 and 164 ;
    - so much of clause (3) of article 166 as relates to the allocation among the Ministers of the business of the Government of the State ;

articles 167 and 169 ;  
 clause (1) of article 174 ; articles 175, 176 and 177 ;  
 clause (c) of article 179 and the first proviso thereto ;  
 articles 181, 188, 189, 193, 194, 196 and 198 ;  
 clauses (3) and (4) of article 199 ;  
 articles 208 to 211 (both inclusive) ,  
 the proviso to clause (1) and the proviso to clause (3) of article 213 ; and  
 so much of clause (2) of article 323 as relates to the laying of the report with a memorandum before the Legislature of the State ;

(iii) any reference in the Constitution to the Governor shall, in relation to the said State, be construed as a reference to the President, and any reference therein to the Legislature of the State or the Houses thereof, shall, in so far as it relates to the functions and powers thereof, be construed, unless the context otherwise requires, as a reference to Parliament, and in particular, references in article 213 to the Governor and the Legislature of the State or the Houses thereof, shall be construed as references to the President and to Parliament or the Houses thereof respectively ;

Provided that nothing herein shall effect the provisions of article 153, articles 155 to 159 (both inclusive), article 299 and article 361 and paragraphs 1 to 4 (both inclusive) of the Second Schedule or prevent the President from acting under sub-clause (i) of this clause to such extent as he thinks fit through the Governor of the said State ;

(iv) any reference in the Constitution to Acts or laws of or made by the Legislature of the State shall be construed as including a reference to Acts or laws made, in exercise of the powers of the Legislature of the State, by Parliament by virtue of this Proclamation, or by the President or other authority referred to in sub-clause (a) of clause (1) of article 357 of the Constitution, and the Assam General Clauses Act, 1915 (Assam Act 2 of 1915) as in force in the State of Assam and so much of the General Clauses Act, 1897 (10 of 1897) as applies to State

laws, shall have effect in relation to any such Act or law, as if it were an Act of the Legislature of the State.

New Delhi. (R. VENKATARAMAN)  
 Dated : 27-11-1990. President.

[F. No. V/11013/11/90-CSR]  
 NARESH CHANDRA, Home Secy.

New Delhi.  
 Dated : 27-11-1990.

आदेश

नई दिल्ली, 27 नवम्बर, 1990

मा. ना. सि. 926 (अ) :—राष्ट्रपति द्वारा जारी किया गया निम्नलिखित आदेश गवर्नराशरण के शूद्धनाथ प्रकाशित किया जा रहा है :—

भारत के संविधान के अनुच्छेद 356 के अधीन मेरे द्वारा आज नवम्बर, 1990 के 27वें दिन जारी की गई उद्धोषणा के लाई (ग) के उपलब्ध (1) का अनुसरण करते हुए, मैं एवं द्वारा निवेश देता हूं कि इसमें राज्य सरकार के सभी कार्य और संविधान के अधीन या उस राज्य में प्रत्येक किसी विधि के अधीन उस राज्य के गवर्नराल में निवित या उसके द्वारा प्रयोक्तव्य सभी शक्तियां, जिनको राष्ट्रपति ने उस उद्धोषणा के लाई (क) के प्राधार पर स्वयं संभाल लिया है, राष्ट्रपति के अधीक्षण, निदेशन और नियंत्रण के अध्ययनीन रहते हुए उस राज्य के गवर्नराल द्वारा भी प्रयोक्तव्य होंगी।

नई दिल्ली. (आर. वेंकटरामन )  
 दिनांक 27-11-90

राष्ट्रपति

नई दिल्ली, [सं. V/11013/11/90-सी. एस. आर.]  
 दिनांक 27-11-90 मरण अन्द्र, गृह सचिव

## ORDER

New Delhi, the 27th November, 1990

G.S.R. 926(E).—The following Order by the President is published for general information :—

In pursuance of sub-clause (i) of clause (c) of the Proclamation issued on this the 27th day of November, 1990 by me under article 356 of the Constitution of India, I hereby direct that all the functions of the Government of the State of Assam and all the powers vested in or exercisable by the Governor of that State under the Constitution or under any law in force in that State, which have been assumed by the President by virtue of clause (a) of the said Proclamation, shall, subject to the superintendence, direction and control of the President, be exercisable also by the Governor of the said State.

(R. VENKATARAMAN)  
 President.

New Delhi.  
 Dated : 27-11-1990.

[No. V/11013/11/90-CSR]  
 NARESH CHANDRA, Home Secy.

New Delhi.  
 Dated : 27-11-1990.

